एस.के.उपाध्याय भा.व.से.
प्रधान मुख्य वन संरक्षक और
विभागाध्यक्ष,उत्तर प्रदेश,

'अरण्य भवन'
17– राणा प्रताप मार्ग,
लखनऊ–226001
का0: 2206168
दूरभाष:– फै0: 2206053

सन्देश

वनों व वृक्षों का महत्व सार्वकालिक व सार्वदेशिक है। मानव जीवन पर इन प्राकृतिक संसाधनों का पड़ने वाले प्रभावों को भौगोलिक सीमा के बन्धन में नहीं बांधा जा सकता है। वनों व वृक्षों से प्राप्त होने वाले लाभों एवं इन प्राकृतिक संसाधनों के संकुचन के कारण होने वाले पर्यावरण प्रदूषण जनित दुष्प्रभावों से हम सभी परिचित हैं। पर्यावरण प्रदूषण जनित दुष्प्रभावों यथा विभिन्न रोगों का आक्रमण, अनियमित मौसम चक्र, धरती के तापमान में वृद्धि, भू कटाव, बाढ़, सूखा आदि से सामान्य जन प्रतिकूल रूप से प्रभावित होने के साथ ही राष्ट्रीय आर्थिक संसाधनों पर अत्यधिक बोझ भी पड़ता है। विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से मानव जाति को त्राण दिलाने हेतु वनावरण व वृक्षावरण विस्तार किया जाना समय की आवश्यकता है।

वनावरण व वृक्षावरण विस्तार का एक सशक्त माध्यम व वृहद कार्यक्रम होने के कारण वृक्षारोपण कार्य में जन–जन का सहयोग व सहभागिता अपरिहार्य है। प्रत्येक वर्ष 01 से 07 जुलाई तक आयोजित किए जाने वाले वन महोत्सव का उद्देश्य वृक्षारोपण को जनान्दोलन का रूप देकर इसे प्रत्येक व्यक्ति का कार्यक्रम बनाया जाना है। प्रदेश में वृक्षारोपण हेतु भूमि चयन, पौधशाला में पौधों की उपलब्धता सुनिश्चित करने एवं अग्रिम मृदा कार्य पूर्ण करने के उपरान्त मानसून की वर्षा होने के साथ ही पौधारोपण प्रारम्भ किया जाएगा।

इस वर्ष गंगा के किनारे स्थित 27 जनपदों में गंगा नदी के जल ग्रहण क्षेत्र विशेषकर जल भराव वाले क्षेत्रों को छोड़कर नदी के दोनों तटों पर एक किलोमीटर चौड़ाई में वृक्षावरण एवं गंगा ग्रामों के समग्र विकास हेतु गंगा हरीतिमा अभियान चलाया जा रहा है। प्रदेश में वन महोत्सव की भावना के अनुरूप 'गंगा हरीतिमा अभियान' एवं 'एक व्यक्ति एक वृक्ष' योजना के अन्तर्गत वृक्ष दान, वृक्ष भण्डारा, वृक्षारोपण में आर्थिक सहयोग एवं समाज के समस्त वर्गों विशेषकर कृषकों, विद्यार्थियों व महिलाओं को वृक्षारोपण कार्यक्रम से सक्रिय रूप से जोड़ा जा रहा है।

वन महोत्सव के अवसर पर प्रदेशवासियों से अनुरोध है कि प्रदेश को हरा–भरा बनाने, बाढ़, भूस्खलन, सूखे व प्रदूषण से मुक्त रखने एवं पतित पावनी व मोक्ष दायनी गंगा के तटों में हरीतिमा संवर्धन तथा अविरल प्रवाह बनाए रखने हेतु अधिक से अधिक पौध रोपित कर रोपित पौधों को वृक्ष का रूप धारण करने में प्रदेश सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों में सहयोगी व सहभागी बनें।

(एस.के.उपाध्याय)